मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- चौतरफा, क्यों फ़ेल हो रहे हैं मोदी? जमीनी हकीकत भयावह! 3
- मई दिवस 1947 : यह एक गाथा है पर आप सबके लिए नहीं! 4
- आतंकियों की पालनहार पाक सरकार के विरुद्ध लाहौर में उठी जन-लहर 5
- ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल से दिलाया जा रहा मज़दूरों को धोखा 8

वर्ष 31 | अंक -19 | फ़रीदाबाद | 6-12 मई 2018 | फोन : - 9999595632 | 2 ₹

'आयुष्मान' का झूठ-पकौड़ा बेचने उतरे मंत्री कृष्णपाल गूजर

फ़रीदाबाद (म.मो.) बीते सप्ताह केन्द्रीय मंत्री एवं स्थानीय सांसद कृष्णपाल गूजर ने गांव टिकावली के लोग़ों को बहकाते हुए चिकित्सा सुविधा के लिये 5 लाख का बीमा करने की बात कही। 'आयुष्मान' कही जाने वाली इस योजना में भारत की 50 करोड़ आबादी को कवर करने की बात कही जा रही है। इसके लिये सरकार गरीब लोग़ों का बीमा करेगी जिससे 5 लाख रुपये तक का इलाज वे किसी भी व्यापारिक अस्पताल में जाकर करा पायेंगे।

झूठ बोलने में माहिर संघियों की सरकार द्वारा तला गया यह 'आयुष्मान' भी मात्र एक पकौड़ा ही है। इस से किसी ग़रीब को कुछ नहीं मिलने वाला। इससे सैंकड़ों-हज़ारों करोड़ का मुनाफ़ा जरूर बीमा कम्पनियां कमा लेंगी, जैसे कि प्रधानमंत्री फ़सल बीमा योजना में देशी-विदेशी पूंजीपति बीमा कम्पनियों ने कमाया है। हां, थोड़ा बहुत मुनाफ़ा व्यापारिक अस्पतालों के हाथ भी लगेगा ही।

जुमलेबाज़ों की इस सरकार की नीयत ठीक से काम करने की हो तो देश में पहले से चल रही ईएसआई स्कीम है। इस स्कीम के तहत हरियाणा के 30 लाख से अधिक

मंत्री कृष्णपाल गूजर : विदेश यात्रा के बाद भी तलने को हैं झूठ के पकौड़े ही!

मज़दूर कवर होते हैं। इस कवरेज के नाम पर इनके वेतन का साढे 6 प्रतिशत हर महीने झपटना तो ईएसआई निगम नहीं भूलता लेकिन जब इलाज की जरूरत पड़ती है तो उन्हें दिल्ली के सफ़दरजंग अस्पताल रैफ़र करने से भी गुरेज नहीं किया जाता। यदि किसी को सफ़दरजंग में ही जाकर फ़र्श पर लेटना है तो वह खुद ही नहीं चला जायेगा, उसे ईएसआई से रैफ़र कराने की क्या जरूरत है?

ईएसआई के अपने नियमानुसार 30 लाख अंशदाताओं के लिये कम से कम 4 बड़े अस्पतालों की आवश्यकता है। जबकि अभी रो-पीट कर मात्र एक फ़रीदाबाद में ही बना है इसके अलावा कम से कम 300 डिस्पेंसरियां भी, जिनमें 1500 डॉक्टर व 7500 अन्य स्टाफ़ होना चाहिये। लेकिन इसके विपरीत न तो पर्याप्त अस्पताल हैं न डिस्पेंसरियां। सेक्टर 8 का जो ईएसआई अस्पताल हरियाणा सरकार चला रही है, उसकी इमारत 200 बेड की है जबकि वहां चलाया जा रहा है 50 बेड का अस्पताल और उसमें भी 10-12 से ज़्यादा मरीज़ कभी होते नहीं क्योंकि वहां न तो डॉक्टर हैं न स्टाफ़ न उपकरण और न ही ऑपरेशन थियेटर चालू होता है।

गुड़गांव में 100-100 बेड के दो अस्पताल खुद ईएसआई निगम चला रहा है जबकि वहां फ़रीदाबाद के एनएच 3 जैसे 2 बड़े मेडिकल कॉलेज अस्पतालों की जरूरत है। अपर्याप्त अस्पतालों के बावजूद सितम यह कि 'रैफरल बिल घटाओ' अभियान के तहत वहां के मरीज़ों को दनादन सफ़दरजंग अस्पताल रैफ़र किया जा रहा है।

जुमलेबाज मोदी एक तरफ़ तो 5 लाख का बीमा करा कर देश के 50 करोड़ लोगों को मुफ़्त चिकित्सा की बात करते हैं वहीं जिन बीमाधारकों से सरकार जबरन बीमा किश्त वसूल करके अपना खज़ाना भरने में जुटी है, उन्हें इलाज नहीं दे पा रही है।

हरियाणा के 30 लाख बीमाकृत मज़दूरों से सरकार का यह निगम 3600 करोड़ वार्षिक से कहीं अधिक जबरन वसूलता है और इलाज के नाम पर होता है ठनठन गोपाल। यदि इसी पैसे का सरकार ठीक से सदुपयोग करे तो हरियाणा की आधी आबादी बेहतरीन चिकित्सा सुविधा प्राप्त कर सकती है क्योंकि 30 लाख बीमाकृत मज़दूरों का मतलब होता है 30 लाख परिवार, जो करीब एक करोड़ 20 लाख आबादी बनती है। परन्तु यहां नीयत किसकी है काम करने की? इन्हें जरूरत भी क्या है जब जुमलेबाज़ी से ही काम चलता हो तो।

एक अकेले मंत्री कृष्णपाल ही नहीं मोदी ने अपने तमाम सिपहसालारों को आदेश दे रखा है कि वे सब काम छोड़ कर झूठ के पकौड़े बेचने में अपनी पूरी शक्ति लगा दें क्योंकि झूठ ही उन सबको 2019 की बैतरणी पार कराने में सहायक हो सकता है।

रिपोर्ट कार्ड तो जनता पेश करेगी आपका, मंत्री विपुल जी!

फ़रीदाबाद (म.मो.) सेक्टर 58 में ढाई किलोमीटर की सड़क के उद्घाटन अवसर पर (30 अप्रैल को) बोलते हुए उद्योग मंत्री विपुल गोयल ने शेखी बघारते एवं अपनी पीठ स्वयं थपथपाते हुए कहा कि वे आगामी चुनाव में जनता के सामने अपना रिपोर्ट कार्ड पेश करेंगे। उन्होंने अपने इस कार्यकाल में विकास कार्यों में कोई असर नहीं छोड़ी है।

विपुल जी आप क्या रिपोर्ट कार्ड पेश करेंगे, रिपोर्ट कार्ड तो क्षेत्र की जनता पेश करेगी जो रोजाना आपकी सरकार एवं उसके भ्रष्ट और निकम्मे अधिकारियों को झेल रही है। सड़कें बनाने, उन पर नारियल फ़ोड़ने को विकास कार्य नहीं कहते। न ही टाउन पार्क में ऊंचा झंडा लगाना व कुछ सड़कों पर खजूर जैसे पेड़ लगाने से कोई विकास होता है। सेक्टरों में सड़क व सीवर आदि बनाने की कीमत तो सरकार प्लॉट बेचते वक्त खरीदार से पहले ही वसूल कर चुकी होती है। उसके बाद हर दूसरे-तीसरे साल उसी सड़क को फ़िर से बनाने का सिलसिला निरंतर चलता रहता है।

करीब 2 वर्ष पूर्व मंत्री विपुल महोदय ने शहर से आवारा कुत्तों व पशुओं को हटाने की बात की थी। लेकिन आज तक एक भी कुत्ता या अन्य पशु शहर की सड़कों से हट नहीं पाया, बल्कि दिन ब दिन उनकी संख्या बढती जा रही है। आवारा सांडों व गायों से जहां सड़क दुर्घटनायें हो रही हैं, वहीं पचासों लोग हर रोज़ कुत्ता काटे के शिकार हो रहे हैं। इलाज के लिये आपके बीके अस्पताल एवं आपके क्षेत्र की किसी भी डिस्पेंसरी में रैबीज़ के टीके तक उपलब्ध नहीं हैं। आपके क्षेत्र में कोई नया अस्पताल या डिस्पेंसरी नहीं खुली, बल्कि जो पहले से बेहाल परिस्थिति में चल रही थीं, और भी बदतर हालात में पहुंच गयी। उनमें न पर्याप्त डॉक्टर व अन्य स्टाफ़ हैं और न ही दवायें और उपकरण।

आपके क्षेत्र में 2 बड़े सरकारी कॉलेज व अनेकों छोटे बड़े सरकारी स्कूल हैं। कॉलेजों में नियमित प्रोफ़ेसरों की जगह चलते-फ़िरते (गेस्ट) प्रोफ़ेसरों से काम चलाया जा रहा है। महिला कॉलेज की प्रिंसिपल ने तो आपके आशीर्वाद से कॉलेज परिसर में खड़े, वर्षों पुराने पेड़ ही कटवा कर बेच खाये। आप हैं कि उसकी रक्षा हेतु ढाल बन कर खड़े हैं। क्योंकि प्रिंसिपल का क्लर्क चमन मंगला आपका करीबी है। दोनों ही कॉलेजों में स्टाफ़ की कमी के साथ-साथ बैठने के लिये कमरों व फ़र्नीचर का भी नितांत अभाव है। इसलिये यहां तो केवल वही छात्र दाखिला लेते हैं जिन्हें दिल्ली में दाखिला न मिला हो। ऐसे में पढाई की दुर्दशा का अनुमान लगाना

मंत्री विपुल गोयल : तभी तक शांति जब तक रिपोर्ट कार्ड जनता नहीं थमाती!

कठिन नहीं।

इससे भी बद्तर हाल आपके तमाम सरकारी स्कूलों का है। ग्रामीण क्षेत्रों की तो क्या बात करें, ओल्ड फ़रीदाबाद शहर के बीचों-बीच (थाने के सामने) लड़कों व लड़कियों के दो बड़े स्कूल हैं। ये दोनों बाबा आदम के ज़माने के बने हैं। इनमें कुछ कमरे तो नये बने हैं लेकिन ये छात्रों की जरूरत के हिसाब से बहुत कम हैं। इसी तरह सेक्टर 15 ए (अजरौंदा) का प्राथमिक स्कूल भवन केवल इसलिये जर्जर हो गया क्योंकि उसमें बरसात के दौरान घुटने-घुटने पानी भर जाता है। इन सभी स्कूलों में स्टाफ़ भी केवल खानापूर्ति के लिये ही है जो बालकों को केवल घेर-घोट कर 5-6 घंटे बैठाये रख सके। इन हालात में जो ज़रा भी साधन सम्पन्न है वह अपने बालकों को आपके सरकारी स्कूलों की बजाय निजी व्यापारिक स्कूलों में ही पढाने की कोशिश करता है।

सीवर का जहां तक मामला है, कच्ची कॉलोनियों की बात तो छोड़िये, सरकारी सेक्टरों का बुरा हाल है। कोई भी सेक्टर ऐसा नहीं है जहां सीवर जाम हुए न खड़े हों। सेक्टर 7 में तो कई जगह सड़कों पर सीवर बहता रहता है। सेक्टर 14-15 जैसे पॉश सेक्टर भी इस समस्या से अछूते नहीं हैं। बारिश की चार बूंदें जो मौसम के सुहानेपन का एहसास कराती हैं वही जब सड़कों पर घुटने-घुटने पानी जमा कर देती हैं तो सड़कों पर चलना भारी हो जाता है। जगह-जगह गाड़ियां पानी में फ़ंस कर खड़ी हो जाती हैं। वर्षा जैसा सुखदायी वरदान सरकारी हरामखोरी व रिश्वतखोरी की बदौलत जनता के लिये अभिशाप बन कर रह जाता है।

पर्यावरण मंत्री के नाते अरावली की पहाड़ियों में आपने जो गदर मचाया उसे भी जनता खूब याद रखेगी। आपका यह विभाग प्रदूषण फ़ैलाने व जनता को लूटने में जिस गति से जुटा है उसका विवरण भी चुनाव के दौरान आपको बताया जायेगा। एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ने यूं ही नहीं फरीदाबाद को दुनिया के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में दूसरे नम्बर पर रखा है। वही आपका असली रिपोर्ट कार्ड होगा।